महाप्रसादजननी (तुलसी नमस्कार)

इन पाठों के बारे में

स्रोत	हर पाठ अपने स्रोत, परम्परा और संस्करण के साथ छपा है। अन्य परम्पराओं और संस्करणों में शब्दों में थोड़ा अन्तर हो सकता है।
लिप्यन्तरण	रोमन पंक्ति देवनागरी से बना IAST लिप्यन्तरण है (ā = दीर्घ आ, ṃ = अनुस्वार, ḥ = विसर्ग, ś/ṣ = श/ष, c = च)। हिन्दी, अवधी और ब्रज पाठों में शब्द के अन्त का मौन 'अ' नहीं लिखा जाता। लिप्यन्तरण में वैदिक स्वर नहीं दिखते।

महाप्रसादजननी (तुलसी नमस्कार)

प्रकार	प्रार्थना
देवता	तुलसी माता
संस्करण	प्रचलित पाठ
परम्परा	वैष्णव
स्रोत	पारम्परिक भक्ति पाठ (प्रचलित मुद्रित एवं मौखिक रूप) — Traditional verse
आभार	पारम्परिक; सार्वजनिक।

महाप्रसादजननी सर्वसौभाग्यवर्धिनी ।

mahāprasādajananī sarvasaubhāgyavardhinī |

आधिव्याधिहरा नित्यं तुलसि त्वं नमोऽस्तु ते ॥

ādhivyādhiharā nityaṃ tulasi tvaṃ namo'stu te ||

अर्थ

हे तुलसी, महान कृपा की जननी, समस्त सौभाग्य बढ़ाने वाली और सदा मानसिक व शारीरिक कष्ट हरने वाली — आपको नमस्कार।

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

इस दस्तावेज़ के बारे में

इस दस्तावेज़ के पाठ सार्वजनिक (पब्लिक डोमेन) पारम्परिक भक्ति पाठ हैं या हमारी टीम द्वारा लिखे गए हैं, और अपने दर्ज स्रोत व संस्करण के साथ छपे हैं।

अर्थ हमारे शब्दों में संक्षिप्त व्याख्याएँ हैं, विद्वत्तापूर्ण अनुवाद नहीं। किसी पाठ के अपने श्लोकों में बताए लाभ पाठ का अंश हैं, गारण्टी नहीं।

कुछ साधनाएँ परम्परा से गुरु-मार्गदर्शन में की जाती हैं। अपनी परम्परा के मार्गदर्शन का पालन करें।